CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विद्यालय अनुभवी एवं गैर–विद्यालय अनुभवी शिक्षक–प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

कबिता पारीक *(शोधार्थी)*
शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
Email-kpareek.1992.17@gmail.com, Mobile-7477832195

First draft received: 14.10.2023, Reviewed: 16.10.2023, Accepted: 29.11.2023, Final proof received: 25.12.2023

सार-संक्षेप

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति निम्न स्तर की हो गयी है। उनकी पाठ योजना के प्रति अभिवृत्ति भी औसत स्तर की होने जा रही है, इसलिए जैसा भावी शिक्षक अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे वैसा ही उनमें शिक्षकत्व उत्पन्न होगा और वैसी ही अपने पेशे के प्रति स्वजागरूकता एवं वचनबद्धता उत्पन्न होगी। यदि शिक्षक जागरूक है उसकी अपने कर्म के प्रति रूचि है, उसके प्रति त्याग की भावना है। उसमें एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण मौजूद है तो वह अपने विद्यालय स्थिति, वातावरण, कक्षाओं के प्रबन्धन, सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्रीय उत्थान में भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द : *प्राथमिक शिक्षा, सर्व शिक्षा अभियान आदि.*

प्रस्तावना

आज शिक्षक शिक्षा से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे भावी शिक्षकों का भी बहुत बुरा हाल है क्योंकि जिन प्रशिक्षकों से वे प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति निम्न स्तर की हो गयी है। उनकी पाठ योजना के प्रति अभिवृत्ति भी औसत स्तर की होने जा रही है, इसलिए जैसा भावी शिक्षक अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे वैसा ही उनमें शिक्षकत्व उत्पन्न होगा और वैसी ही अपने पेशे के प्रति स्वजागरूकता एवं वचनबद्धता उत्पन्न होगी। यदि शिक्षक जागरूक है उसकी अपने कर्म के प्रति रूचि है, उसके प्रति त्याग की भावना है। उसमें एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण मौजूद है तो वह अपने विद्यालय स्थिति, वातावरण, कक्षाओं के प्रबन्धन, सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्रीय उत्थान में भूमिका निभा सकता है।

अध्ययन का महत्व

अभिवृत्ति एक मनोसामाजिक सम्प्रत्यय है। अपने चारों ओर फैले हुए वातावरण में अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, धारणाओं, विचारधाराओं, नारों आदि से हमारा सम्बन्ध होता है और इन सम्बन्धों में सामान्यतया हमारे मनोभाव कुछ ऐसे होते हैं कि इनमें से हम किसी को पसंद नहीं करते हैं। किसी को पसंद करते हैं या इनमें से किसी विषय में तटस्थ रहते हैं। सामान्यतया हम विष्वविद्यालयों, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों आदि के प्रति अलग-अलग व्यवहार करते हैं। इन्हीं व्यवहारों के द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर हम इन वस्तुओं के विषय में अपनी रुचि/अभिरुचि को प्रकट करते हैं। यह तो निष्चित रूप से कहा जा सकता है कि अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के द्वारा अनुभवों के आधार पर अर्जित की जाती हैं और ये कोई जन्मजात, विशेषता, कारक या क्षमता नहीं है। अतः इसके निर्माण में परिवार, समाज, विद्यालय व शिक्षकों का बहुत बड़ा हाथ होता है।

चूँकि प्रत्येक व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं अतः कार्य की सफलता बहुत कुछ कार्य को करने वालों पर निर्भर होती है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालय अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करना इसी महत्व को दर्शाता है।

अतः वर्तमान समय में अभिवृत्ति के महत्व को देखते हुए शोधकर्त्री ने शोध हेतु **''विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालय अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''** शीर्षक रखा है।

अध्ययन का औचित्य

अनेक विद्वानों सिंह, एच. एल. (1974), राना, ए.यू. (1981), बिसारिया, एस. (1991), शफीक, एन.वाई. (2003), कुमार एस. एवं पटनायक पी. एस. (2004), चौहान, मीना (2009) आदि ने शिक्षकों की विशेषताओं से सम्बन्धित अनेक चरों पर अलग-अलग शोधकार्य किए गये हैं, लेकिन शिक्षकों की अभिवृत्ति को साथ लेकर किया गया कोई अध्ययन अभी प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्त्री ने ***''विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालय अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''*** को अपने शोध का प्रतिपाद्य विषय बनाया। शोधकर्त्री का मानना है कि इस शोध के निष्कर्ष शिक्षा जगत में न्यूनाधिक मात्रा में अपना योगदान अवश्य दे सकेंगे।

समस्या कथन

''विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालय अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य

विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालयी अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

विद्यालय अनुभवी एवं गैर-विद्यालयी अनुभवी शिक्षक-प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के गंगानगर एवं हनुमानगढ जिले जिलों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में 400 शिक्षक-प्रशिक्षकों को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयन कर न्यादर्श के रूप में चयन गया है।
3. 400 शिक्षक-प्रशिक्षकों में विद्यालय अनुभवी (100 पुरूष एवं 100 महिला) तथा गैर-विद्यालय अनुभवी (100

पुरूष एवं 100 महिला) शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

अभिवृत्ति मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति के मापन हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

विद्यालय अनुभवी एवं गैर–विद्यालयी अनुभवी शिक्षक–प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

शिक्षक प्रशिक्षक	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R. Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
विद्यालय अनुभवी	200	99.16	11.61	1.55	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
गैर–विद्यालय अनुभवी	200	95.17	9.71			

(df=N_1+N_2 &2=200+200&2=398)

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् विद्यालय अनुभवी एवं गैर–विद्यालयी अनुभवी शिक्षक–प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

१ण प्रस्तुत शोध शिक्षकों को एक अच्छे शिक्षक के गुण धारण करने में मदद करेगा।

२ण प्रस्तुत शोध शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य मधुर सम्बन्धों के निर्माण में शिक्षकों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करेगा।

३ण प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण एवं पाठ योजना प्रदर्शन कौशल के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध ज्ञात किया जा सकेगा जो शैक्षिक जगत् के लिए एक वरदानस्वरूप होगा।

४ण शिक्षक–प्रशिक्षकों में शिक्षण एवं पाठ योजना प्रदर्शन कौशल के प्रति उच्च अभिवृत्ति का विकास करने में प्रस्तुत शोध महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेगा।

५ण गैर–विद्यालय अनुभवी शिक्षक प्रशिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति रूचि का विकास किया जा सकेगा।

६ण इस प्रकार के शोध कार्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करेंगे। शोधकर्त्री इस प्रकार की समस्याओं पर भविष्य में निरन्तर कार्य करने की प्रबल इच्छुक है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

१ण अग्रवाल, जे.सी (2003) :–''शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध'', विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण

२ण अग्निहोत्री, आर. (1987) :–''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समापन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

३ण अदावत, सुबोध, अग्रवाल कन्हैया लाल (1978) :– ''शिक्षा के सिद्धान्त, प्रगति प्रिन्टर्स, दिल्ली, पृ.सं. – 245

४ण अस्थाना, विपिन, :– ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

५ण ओड़, एल.के (1991) :– ''शैक्षिक प्रशासन'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,